दाम्पत्य प्रबन्ध

(Marital Management)

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–।।।, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

दाम्पत्य प्रबन्ध

क्रम सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	दाम्पत्य सम्बन्ध	1
2.	विवाह एक कन्यादान	6
3.	दाम्पत्य सदव्यवहार	8

दाम्पत्य (वैवाहिक) सम्बन्ध

यह एक ऐसा सम्बन्ध है जिसको जीवन पर्यन्त निबाहना होता है जिसको जीवन के बीच रास्ते में तोडना पाप माना जाता है। इस सम्बन्ध में अपने जीवन साथी की अच्छाईयों तथा बुराईयों सभी को स्वीकार करते हुए, तथा अपने इस सम्बन्ध को और सुन्दर तथा और सुन्दर बनाने का प्रयास करते हुए जीवन के अन्तिम पड़ाव तक ले जाना होता है और अगर आप अपनी जीवन यात्रा के बीच में थक लेते हैं तथा इस सम्बन्ध को निभा नहीं पाते हैं तो अवश्य रुप से आप एक असफल जीवन साथी हैं।

आपको अपने को सफल बनाने के लिए सुन्दर–सुन्दर तरीके सीखने होते हैं तथा अपने को सफल बनाना होता हैं। मेरा यह मानना है कि आप अगर अपने इस सम्बन्ध की बुनियाद को समझ लेवें तथा उसको अपने मन में बसा लेवें बार–बार पढकर बार–बार समझकर बार–बार इन्हें दोहराकर तो शायद निश्चित है कि आप अपने दाम्पत्व सबन्ध को सफलता पूर्वक निभा पायेगें। तथा इस रास्ते में बाधाऐं पैदा ही नहीं होगीं।

इस दाम्पत्य सम्बन्ध की बुनियाद है सात वचन जो शादी के दौरान पति पत्नी आपस में वचन भरते है जो निम्न लिखित है।

<u>पत्नी जो पति से वचन भरवाती है।</u>

1. आप जो यज्ञ करे उसमें भी मेरी सम्मति लें।
(व्याख्या : पति की कमाइ पर पहला हक पत्नी का बनता है अतः उसको पत्नी की सम्मति से ही खर्च किया जाऐ)

2. जो दान करें उसमें भी मेरी सम्मति लें।
(व्याख्या : ठीक उपरोक्त व्याख्या के समान ही है।)

4. माया आदि कहीं ढकें धरें तो उसमें भी मेरी सम्मति लें।
(व्याख्या : यह भी ठीक पहली व्याख्या सी ही है बस थोडा सा

इतना कि खुद न करे अगर पति को कभी कुछ हो जाऐ तो वह धन जिस पर पत्नी का हक है उसे कैसे मिल पायेगा। पत्नी तो व्यर्थ में ही वह धन जो उसके बाकी जीवन व्यवस्था के काम आता गंवा बैठेगी।)

5. गाय बैल घोड़ा आदि जो पशु खरीदें तो उसमें भी मेरी सम्मति लें।
(व्याख्या: पुराने जमाने में ये सब धन–सम्पत्ति, वाहन माने जाते थे अब रुप बदल गया है अब यह कार, ए. सी. आदि हो गये है मतलब है कि यह सब धन जिसपर पत्नी का हक है उस धन का उपयोग है और धन का उपयोग पत्नी की सम्मति से ही होना चाहिए।)

6. वसन्त ग्रीष्म वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, छहों ऋतुओं में मेरा पालन करे।
(व्याख्या: पत्नी का पालन करना पति का बारह महीने का कर्तव्य है न कि अपनी आवयकता अनुसार।)

7. साथ की सहेलियों में मेरी हंसी न करे और न कठोर वचन कहे।
(व्याख्या: पत्नी को अपनी सहेलियों में अपना मान सम्मान अपने प्रति प्रेम बनाना होता है और अगर पति पत्नी की मजाक बनाऐगा तो वह कैसे अपनी सहेलियों की एक प्यारी सी सहेली बनकर रह पाएगी। कठोर वचन इसलिए न कहे क्योंकि स्त्री का मन बडा कोमल होता है थोडी सी भी कठोरता से कुचल जाता है।)
पत्नी उपर लिखे सात वचन पति से भरवाती है और पति अगर इनके लिए तैयार है तभी शादी के लिए तैयार है ऐसा मानना है।

<u>पति जो पत्नी से वचन भरवाता है।</u>
कुछ शास्त्रों में तो पति द्वारा 4 वचन भरवाने की प्रकिया है तथा कहीं कहीं 7 वचन भरवाने की। दोनों ही एक–एक करके निम्नलिखित है।

<u>प्रथम: वचन</u>
1. उद्यान जो जंगल है अर्थात वह वहा न जाए।
(व्याख्या: जंगल में जाने से कोई दुर्घटना हो सकती है जब कि पत्नी की

सुरक्षा की जिम्मेदारी पति पर होती है तो पति तो सुरक्षा तभी कर पायेगा जब पत्नी ऐसे स्थानों से बचे जहा दुर्घटनाओं की संभावना है ।)

2. शराब अर्थात जो मनुष्य शराब पिए हुए हो उसके सामने न जाऐ ।
(व्याख्या : यह भी ठीक उपर लिखी जैसी ही है क्योंकि शराबी तो होश में नहीं होता है, मस्ती में होता है, लाज लज्जा से परे होता है अगर स्त्री उसके सामने जाएगी तो दुर्घटना की, अशोभानीय बातों की, अशोभनीय हरकतों की पूरी संभावनाऐं हैं जो जीवन में फालतू के झगडे बढा सकती हैं । अर्थात इससे बचें ।)

3. अपने पिता के यहा मेरी आज्ञा के बिना न जाए ।
(व्याख्या : पत्नी पति के धर का, पति के काम काजों का ध्यान रखती है अगर पत्नी बिना पूछे जाऐगी और पति को कुछ पत्नी से काम हुआ तो वह कैसे होगा और अगर पूछकर जाएगी तो पति अर्थात परिवार के मुखिया के परिवार के कामो के बिगड जाने की संभावनाऐ नही रहेगी । परिवार का मुखिया परिवार की दूसरी व्यवस्था बना तो लेगा । यह एक अच्छी कर्तव्य निष्ठा है ।)
दूसरे पत्नी का अपने पिता के धर बार–बार जाना उसके सम्मान को ठेस पहुंचा सकता है, बेटी जब अपने माता पिता के धर जाती है तो अक्सर वे उसे अवश्य कुछ न कुछ प्रेमवश देते है । यह बात ऐसा प्रभाव छोड सकती है, और परिवार के सदस्यों पर कि वह वहां इस समान के लालच मे आ रही है और यह परिवार के मुखिया के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाएगा ।
4. शास्त्रोचित मेरी आंज्ञा भंग न करे ।
(व्याख्या : सही तो है सम्बन्धों में अनुशासन रखने हेतु आज्ञा मानना आवश्यक है तथा पत्नी का मान सम्मान एक स्त्री के तौर पर सुरक्षित रखने हेतु पति के द्वारा दी गयी ऐसी आज्ञाओं को शास्त्रों के हिसाब से उचित है मानना आवश्यक है । जो शास्त्रों के हिसाब से जो आज्ञाऐं अनुचित है, को इस बन्धन से मुक्त कर दिया गया है ।)

अब पत्नी अगर यह सब मानने को तैयार है तभी पति शादी करने के लिए तैयार है।

<u>द्वितीया सात वचन जो कहीं–कहीं ये 7 वचन भरवाए जाते है।</u>

1. हमारे कुल का जो धर्म है तु धारण कर।
(व्याख्या : चूंकि पत्नी पति के कुल में आती है तथा आगे का जीवन पति के धर में व्यतीत करना होता है तो यही बेहतर है कि पति के कुल का धर्म अपनाया जाए इससे दो धर्मो की रीति रिवाजों में जो फर्क होता है उससे पैदा हाने वाले संघर्षो से सब बच पाते है। अगर पत्नी अपने धर्म की हठ करेगी तो पति के कुल के लोगों के जीवन में बाधाए पडेगी एवं क्लेश पैदा होगे।)

2. हमारा जो कुटुम्ब है उसको सुख देवे।
(व्याख्या : क्योंकि पत्नी के द्वारा पति के कुटुम्ब को सुख देने न देने से पति के परिवार का अपने कुटुम्ब में मान–सम्मान बनता व बिगड़ता है अतः इसका ध्यान रखना आवश्यक है।)

3. मीठी वाणी बोले, क्रोध न करे, आलस्य न करे, धर्मानुकुल वृद्धजनों के उपदेशों को सादर स्वीकार करे।
(व्याख्या : ठीक ही तो है मधुर भाषा बोलेगी तो सबकी प्यारी बनी रहेगी। कोध नहीं करेगी तो तमाम क्लेशों से बचेगी, आलस्य न करेगी तो अपने कर्तव्यों को सही से पूरा कर पाऐगी तथा दूसरों के क्रोध से बच पाऐगी। अगर वृद्धजनों के उपदेशों को सादर स्वीकार करेगी तो वृद्धजनों का उन पर आर्शीवाद बना रहेगा।)

4. यश और सुख दे।
(व्याख्या : शादी के बाद यह गृहस्थ एक नया संसार बनता है इसको यशस्वी एवं सुखी बनाने में पत्नी को बहुत बडा योगदान होता है जिसकी सभी कामना करते है तथा ऐसी कामना करनी ही चाहिए

ताकि भगवान आपको धरती पर जनम देकर खुशी का अनुभव कर सके।)

5. मेरी आज्ञा का पालन करे।
(व्याख्या : शादी के बाद यह एक नया संसार होता है पति जिसका मुखिया अर्थात परिवार का मुखिया होता है तथा जहां मुखिया की आज्ञा का पालन किया जाता है उस परिवार में अनुशासन बना रहता है जो तरक्की की तरफ परिवार को ले जाता है।)

6. मेरे माता पिता की सेवा करे।
(व्याख्या : हर पुत्र का धर्म होता है कि वह अपने माता पिता की सेवा करे तथा पत्नी पति की अर्द्धांगिनी होती है एवं पत्नी जो भी करती है ऐसा ही माना जाता है जैसे कि वो पति ने किया पत्नी के द्वारा माता पिता की सेवा करने से पुत्र का अपने माता पिता की सेवा के धर्म का पालन होता है। अतः करनी चाहिए।)

7. मेरी जो बहने हैं उनसे क्रोध न करे।
(व्याख्या : ठीक उपर लिखी व्याख्या की तरह ही यहां पत्नी को अपने पति के भाई धर्म को निभाने में मदद करनी होती है भाई को अपनी बहनों को प्यार से रखना होता है क्योंकि बहने भी स्त्री मन रखती है तथा उनसे कोध करना उनके मन को कुचलने जैसा है जिससे बहनों का जीवन कुण्ठित होने का खतरा है। तथा चंकि पत्नी अर्द्धांगिनी है पत्नी जो भी करती है ऐसा माना जाता है कि पति ने किया है अर्थात यहां भाई धर्म यहां पति कहता है कि अगर पत्नी यह सब मानने के लिए तैयार है तो मैं शादी करुं अर्थात अपने बाऐ अंग लूं।

मेरा ऐसा मानना है कि अगर पति पत्नी इन वचनों को सही से समझ लें, इनका सार अपने मन में धारण कर लें समय समय पर इनको पढते रहें ताकि उनका मन इन्हे कभी न भूले जैसे हर शादी की साल गिरह पर फिर पढ लें, जब भी कोई मन में शंका बने तब पढ लें तो गृहस्थ जीवन अत्यन्त सुखपूर्वक अपना जीवन काल पूरा करेगा।

विवाह एक कन्यादान (गाय दान की तरह)

कन्या के विवाह को कन्यादान कहा जाता है अगर इस का सही से अर्थ (जैसा गऊदान में होता है) अपने मन में धारण कर लिया जाए एवं इसको वही माना जाए तो मै समझता हूं हजारों रोजमर्रा क्लेशों से रोजमर्रा बचा जा सकता है। देखे दान में क्या होता है।

1. यही वजह है दामाद को भगवान विष्णु का रुप माना जाता है तथा यही समझकर कन्या का दान उहें दिया जाता है।
2. दान जब हम देते हैं तो उसे तन मन धन से अर्पण किया जाता है। दान लेने वालेंका धर्म है कि वह श्रद्धा से खुशी खुशी एवं दान देने वाला जो भी अपनी सामर्थ्यानुसार दे उसको खुशी खुशी प्रसाद समझकर लेवे कभी मुह न बिसाने तथा दान देने वाले का धर्म है वह अपनी सामर्थ्यानुसार ज्यादा से ज्यादा खुशी खुशी एहसान न जताते हुए दान देवे तभी दान तन मन धन से दिया हुआ दान बन पाऐगा।

दान देने वाले का धर्म :– जो मै दान कर रहा हूं उससे पाने वाले को खुशी मिले, उसे कोई परेशानी न हो क्योंकि दान लेने वाले को जो भी प्राप्त होगा, खुशियां, परेशानियां, क्लेश, अच्छी शिक्षाऐ, प्रेम अर्थात अच्छा–तो दान का अच्छा फल, बुरा तो दान का बुरा फल। यही वजह है कन्या के माता पिता को अन्तिम समय तक यह ध्यान रखना होता है यथासम्भव कि उनका दिया हुआ दान दान लेंने वाले को कोई परेशानी तो नही दे रहा है वह खुश है न क्या मैं कोई मदद करुं ताकि मेरा दिया गया दान एक अच्छा दान कहलाए।

दान लेने वाले का धर्म :–
1. जो दान में मिला है उसमे संतोष माने

2. जो दान में मिला है उसका ध्यान रखे कि उसको कोई परेशानी न हो, वह इस बात पर गर्व कर सके कि वह एक सुपात्र के हाथों में है, वह सुरक्षित है, अब उसका पहले से भी अच्छा भविष्य है।
3. दान देने वाला गर्व कर सके कि उसने अपना दान एक अच्छी जगह दिया है।
4. कन्या का उद्धार हो, उसका जीवन सफल हो।

दान दी गयी कन्या का धर्म :–

1. जिसमे उसे दान लिया उसका मन उस दान को पाकर खुश हो जाए, उसको पछताना न पडे कि उसने कैसा दान ले लिया।
2. वह अपना व्यवहार अपने कर्म ऐसे रखे कि जिसने उसको दान किया उसकी प्रशंसा हो, उस पर कोई अतिरिक्त बोझ न पड़े।
3. उसके माता पिता द्वारा दिया गया दान सफल दान बने, उनका पुण्य ज्यादा से ज्यादा बढ़े। ऐसा न हो जाऐ कि यह दान पुण्य न बन पाऐ, या पाप न बन जाऐ कि अगर यह एक अच्छी कन्या न बनी क्लेश कारक कन्या बनी तो यह उनके लिए पुण्य की जगह पाप बन जाएगा।
3. अपने माता पिता में आसक्ति कन्यादान के पुण्य को घटाऐगी। उसको दान लेने वाले के अर्थात पति के मन का ध्यान रखना होता है अर्थात ऐसा मन जैसा पति सोचता है, कहता है और न कि ऐसा मन जैसा कि कन्या को लगता है हो सकता है
कभी – कभी कन्या इतनी समझदार न हो कि वह अपने पति के मन को सही न समझ पाती है।
4. यथा सम्भव ज्यादा से ज्यादा यहां पर महत्वपूर्ण हैं।

दाम्पत्य व्यवहार

1. पति व पत्नी का आपस का व्यवहार : पति का यही भाव रहना चाहिए कि वह अपने माता पिता भाई आदि सब को छोडकर मेरे पास आयी है। इसको किसी तरह का कष्ट न हो शरीर निर्वाह के लिए इसको रोटी, कपडा, स्थान आदि की कमी न हो तथा मन की खुशी के लिए हंसता खेलता व्यवहार छोटी–छोटी और बहुत सी खुशियां, उपहार, इज्जत आदि भी यथोचित मिलता रहे। मेरी अपेक्षा उसको ज्यादा सुख मिले। साथ ही उसके पतिव्रत धर्म का भी ख्याल रखे कि वह उच्छृंखल न बने और उसका कल्याण हो जाऐ। पत्नी का भाव होना चाहिए कि मैं अपना धर परिवार कुटुम्ब छोडकर इनके पास आयी हूं तो मेरे कारण इनको दुख न हो अगर मेरे कारण इनकी निन्दा होगी तो बडी ही अनुचित बात हो जाएगी मैं चाहे कितना ही कष्ट सह लूं इनको जरा सा भी कष्ट न हो इस तरह वह यह सोचती रहे कि इनका लोक परलोक केसे सुधरे। ऐसा करने से पति के मन में उसके प्रति श्रद्धा, प्रेम बढेगा जो पत्नी को सुख देगा और पति भी सुखी होगा।

2. गृहस्थ का अपने पडोसी के साथ व्यवहार : पडोसी को अपने परिवार का ही सदस्य मानना चाहिए। यह अपना है और यह पराया है ऐसा भाव तुच्छ हदय वालों का होता है उदार हदय वालों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही कुटुम्ब है भगवान के नाते सब हमारे भाई है। अतः खास धर के आदमियों की तरह ही पडोसी से बर्ताब करना चाहिए धर में कभी मिठाई या फल आदि आऐ और सामने पडोसी के बालक हो तो मिठाई आदि देते समय पडोसी के बालको को ज्यादा दे फिर अपने बहन बेटी के बच्चों को दे चाचा के बच्चों को दे अन्त में अपने बच्चों को दे। इसमें सोचे नही कि हमारा तथा हमारे बच्चों का नुकसान हो गया। नही इसमें नुकसान नही है क्योंकि हम जैसा व्यवहार पडोसी के बच्चों के

साथ करेगे वैसा ही वे हमारे बच्चों के साथ करेगे। सब बराबर हो जाता है खास बात है कि ऐसे बर्ताव से आपस में प्रेम बहुत बढ जाएगा। प्रेम की जो कीमत है दूसरी किसी चीज की नही है।पडोसी के पालतू जानवर हमारे घर आ जाऐ तो भी हम गुस्सा न करे तथा सौम्य व्यवहार करे। पडोसी क्रूर बर्ताव भी कर दे तो भी क्रोध न करें हम ध्यान रखे कि हमारे पालतू जानवरों से पडोसी का नुकसान न हो। हमारे घर में कोई विवाह, उत्सव आदि हो तो उसमें बढ़िया–बढ़िया मिष्ठान आदि बने तो पडोसी के बालको को भी देना चाहिए क्यों कि पडोसी हाने के नाते वे तुम्हारे कुटुम्बी है। इससे भी अधिक प्रेम हो तो जैसे बहन बेटी के विवाह में मिठाईयां बॉटी जाती है तो पडोसी को भी ऐसे ही देवें।

3. <u>नौकर के साथ व्यवहार</u> :– नौकर के साथ अपने बालक की तरह बर्ताव करना चाहिए। नोंकर दो तरह से रखा जाता है प्रथम नौकर को वेतन भी देते है भोजन भी, द्वितीय नौकर को केवल वेतन देते है एवं भोजन वह अपने घर पर करता हे। जो नौकर वेतन व भोजन दोनो लेता है उसके साथ भोजन में विषमता नही करनी चाहिए। भोजन एक ही तरह का बनाना चाहिए और सभी ने मिल बॉटकर खाना पीना चाहिए। समय पर भिक्षुक भी आ जाए तो उसे भी देना चाहिए। जो नौकर केवल वेतन लेता है वह चाहें जैसे करे। मगर अगर कभी घर में मिठाईयां आदि बनें तो नौकर के बच्चों को देनी चाहिए। उसे वेतन तो यथोचित देना ही चाहिए मगर समय समय पर इनाम, कपडा, मिठाई आदि भी देते रहना चाहिए। अधिक तन्ख्वाह का उतना असर नहीं होता है जितना असर इनाम का होता है । नौकर को इनाम देने से देने वाले के हदय में उदारता आती है आपस में प्रेम बढता है जिससे वह समय पर चोर, डाकू आदि से भी हमारी रक्षा करता है तथा विवाह आदि के अवसर पर भी उत्साह से काम करता है।

4. <u>अतिथि के साथ व्यवहार</u> :– अतिथि मतलब जिसके आने की तिथि निश्चित नही है अर्थात अचानक आ जाने वाला। "अतिथि देवो भवः" कहा जाता है अर्थात यह भगवान भी हो सकता है क्योंकि कि कभी भगवान तुम्हारी परीक्षा लेना चाहते हों तो वे भी तो ऐसे ही किसी का रुप धरकर आते है अतिथि भी कई प्रकार के होते हैं कुटुम्बी, जानकार, ब्रहाचारी, साधु, सन्यासी, गुरु, भाई, भिक्षुक, वक्त का मारा हुआ आदि । गृहस्थ का धर्म है सभी को यथोचित सम्मान दे यथोचित प्रसन्न करे। कुछ अतिथि घर में ठहराने के अधिकारी होते है जैसे कुटुम्बी, जानकार आदि। कुछ को रोकना नहीं होता है मगर प्रसन्न मन से उसकी मदद कर देना होता है अतिथि सेवा में आसन देना, जल पिलाना, भोजन कराना आदि बहुत सी बाते होती हैं अतिथि के अधिकार क्षेत्र का ध्यान रखते हुए सब कुछ अवश्य ही करना चाहिए अगर ये भगवान है तो हमारे प्रति अपने मन में नफरत लेकर न जाऐ। गृहस्थ को भीतर से तो अतिथि को परमात्मा का स्वरुप मानना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए उसको अन्न जल देना चाहिए पर बाहर से सावधान रहना चाहिए अर्थात उसको घर का भेद नहीं देना चाहिए, घर को दिखाना नही चाहिए आदि । ताप्पर्य है कि भीतर से आदर करते हुए भी उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि आजकल अतिथि के वेश में कौन आ जाए भगवान भी हो सकता है, राक्षस भी। भगवान हो तो खुश होकर जाए मन में हमारे प्रति नफरत न लेकर जाऐ। और राक्षस है तो नुकसान न पहुंचा सके।

मैं समझता हूं कि अगर नवदम्पति अपने व्यवहार में उपर लिखित बातों का ध्यान रखेंगे तो अपने गृहस्थ को अच्छी तरह से निभा पाऐंगे एवं सराहे जाऐंगे एवं प्रेमपूर्ण वातावरेण का आनन्द ले सकेंगे।